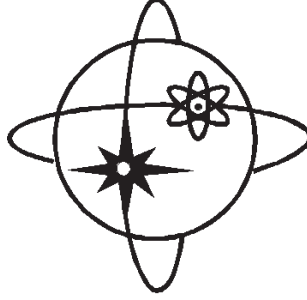


# बेहद का वैराग्य



# बेहद का वैराग्य



**कृति**

(संकलन)

**स्पार्क (SpARC)**

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

एवं

राजयोग एज्युकेशन एवं शोध प्रतिष्ठान

पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान

## स्पार्क (SpARC)

स्पार्क (SpARC) एक अनुसन्धान प्रभाग (Research Wing) है जो कि देश तथा विदेश के अनेक स्थानों पर कार्य कर रहा है। स्पार्क (SpARC) शब्द का विस्तार (Fullform) Spiritual Applications Research Centre है और इसका लक्ष्य है विश्व नव-निर्माण के कार्य में अध्यात्म एवं विज्ञान को एक-दूसरे का सहयोगी बनाना। इसी लक्ष्य-पूर्ति के लिये स्पार्क मनन-चिंतन और विचार सागर मंथन के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को वैज्ञानिक पृष्ठभूमि और विज्ञान के विरोधोक्ति युक्त शाखाओं को आध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हुए दोनों को एक-दूसरे के समीप लाकर आपस में मिलकर कार्य करने के लिए तैयार कर रहा है।

इस कार्य में तीव्र गति से अग्रसर होने के लिए तथा जीवन के समस्त पहलुओं में आध्यात्मिकता का प्रयोग और उपयोग से प्राप्त परिणामों को सर्वमान्य बनाने के लिए प्रभावशाली विधि, साधन और तकनीक का विकास करने आदि कार्य में **स्पार्क सर्व प्रकार के अनुसन्धानों को प्रोत्साहित करता है।**

## लोकल चैप्टर:

स्पार्क की गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने के लिए देश-विदेश में स्पार्क के लोकल चैप्टर्स चल रहे हैं। एक अथवा एक से अधिक सेवाकेन्द्र, शहर, राज्य अथवा देश के 5 से अधिक बी.के. भाई-बहनों के समूह जब मिलकर स्पार्क के गतिविधि को कार्यान्वित करते हैं उसे स्पार्क लोकल चैप्टर (Local Chapter) कहा जाता है। किसी भी स्थान पर लोकल चैप्टर शुरू करने के लिए यह आवश्यक है कि उस स्थान के सेवाकेन्द्र की प्रभारी बहन की स्वीकृति से सेवाकेन्द्र पर 5 से अधिक दैवी भाई-बहनों का एक ग्रुप तैयार किया जाए। सभी भाई-बहनें सप्ताह में, 15 दिन में या मास में कम से कम एक बार आपस में मिलकर ईश्वरीय ज्ञान बिन्दु पर रूह-रिहान, विचार-सागर मंथन करें तथा कार्यशाला और परिचर्चा आदि कार्यक्रम का आयोजन करें। ब्र.कु. भाई-बहनों के आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ अन्य आत्माओं की सेवा करने के लिए नवीन विधियों का निर्माण कर सकें।

इसके तहत कई वर्षों से गांधीनगर, गुजरात मुख्य सेवाकेन्द्र के भाई-बहनों का एक ग्रुप अव्यक्त मुरलियों का गहन अध्ययन कर उस पर अभ्यास कर रहा है। इस पुण्य पुरुषार्थ के फल स्वरूप इस ग्रुप ने 40 से अधिक विषयों पर अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों को सुनियोजित तरीके से संकलन किया है। उनमें से 'बेहद का वैराग्य' एक है।

## प्रस्तावना

प्यारे बापदादा हम ब्राह्मणों को इस कलियुगी दुनिया के आकर्षण से मुक्त रह बेहद के वैराग्य को धारण करने के लिए बार-बार इशारा देते रहते हैं। बेहद के वैराग्य को धारण करने से ही अंतिम श्रेष्ठ स्थिति को प्राप्त करना है। इस 'बेहद के वैराग्य' विषय पर अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों का यह संग्रह है। जिसे पढ़ने से हमें इसकी गुह्यता और यथार्थ समझ प्राप्त होती है, जिससे उसको धारण करना सहज होता है।

ओम् शान्ति

## बापदादा का इशारा - 'बेहद की वैराग्य वृत्ति धारण करो'

जितना स्नेही होंगे उतना बेहद का वैराग्य होगा। यह है मधुबन का अर्थ। अति स्नेही और इतना ही बेहद की वैराग्य वृत्ति। अगर मधुबन के विशेष गुण जीवन में धारण करके जायें तो सहज ही सम्पूर्ण बन सकते हैं।

एक स्नेह से दूसर बेहद की वैराग्य वृत्ति से कोई भी परिस्थितियों को सहज ही सामना करेंगे। सफलता के सितारे बनने के लिये यह दो गुण मुख्य मधुबन की सौगात ले जाना है।

अभी ऐसा बदल कर दिखाओ जो सभी के आगे इग्जाम्पुल बनो। अब एक सेकेण्ड भी नहीं गंवाना है। चेक आप कर सकते हो। अब समय बहुत थोड़ा रह गया है। समय भी बेहद की वैराग्य वृत्ति को उत्पन्न करता है। लेकिन समय के पहले जो अपनी मेहनत से करेंगे तो उनका फल ज्यादा मिलेगा। जो खुद नहीं कर सकेंगे उन्हां के लिये समय हेल्प करेगा। लेकिन वह समय की बलिहारी होगी। अपनी नहीं।

(26.01.1970)

अभी यही तीव्र पुरुषार्थ करना है। इस पुरानी दुनिया से बहुत सहज बेहद का वैराग्य लाने का साधन क्या है? (कोई-कोई ने बताया) जिन्होंने जो बात सुनाई वह सहज समझ सुनाई ना। अगर सहज ही है तो बेहद के वैरागी तो सहज बन गये। अगर अपने से ही न लगाया तो दूसरों से कैसे लगायेंगे। बेहद का वैराग्य कहते हैं। जो वैरागी होते हैं वह कहाँ निवास करते हैं? बहुत सरल युक्ति बताते हैं कि बेहद का वैरागी बनना है तो सदैव अपने को मधुबन निवासी समझो। लेकिन मधुबन को खाली नहीं देखना। मधुबन है ही मधुसूदन के साथ। तो मधुबन याद आने से बापदादा, दैवी परिवार, त्याग-तपस्या और सेवा भी याद आ जाते हैं। मधुबन तपस्या भूमि भी है। मधुबन एक सेकेण्ड में सभी से त्याग कराता है। यहाँ बेहद के

वैरागी बन गये हो ना। तो मधुबन है ही त्यागी, वैरागी बनाने वाला। जब बेहद के वैरागी बनेंगे तब बेहद की सर्विस कर सकेंगे। कहाँ भी लगाव न हो। अपने आप से भी लगाव नहीं लगाना है तो औरों की तो बात ही छोड़ो।

**(02.07.1970)**

यह स्मृति सदैव रहे कि मैं निराकार से साकार में आकर यह कार्य कर रही हूँ। बीच-बीच में हर कर्म करते हुए इस स्थिति का अभ्यास करते रहो। तो निराकार हो साकार में आने से निरहंकारी और निर्विकारी ज़रूर बन जायेंगे। यह अभ्यास अल्पकाल के लिए करते भी हो, लेकिन अब इसी को सदाकाल में ट्रान्सफर करो। यूँ वैरागी भी बने हो, वैराग्य वृत्ति है, लेकिन सदाकाल के लिए और बेहद के वैरागी बनो। नहीं तो कोई हद की वस्तु वैराग्य वृत्ति से हटाने के लिए निमित्त बन जाती है।

**(15.09.1971)**

जो फ्युचर में महाविनाश होने वाला है और नई दुनिया आने वाली है, वह भी आपके फीचर्स से दिखाई दे। देखेंगे तो फिर वैराग्य आटोमेटिकली आ जावेगा। एक तरफ वैराग्य दूसरे तरफ अपना भविष्य बनाने का उमंग आवेगा। जैसे कहते हो -एक आंख में मुक्ति, एक में जीवनमुक्ति। तो विनाश मुक्ति का गेट और स्थापना-जीवनमुक्ति का गेट है; तो दोनों आंखों से यह दिखाई दे। यह पुरानी दुनिया जाने वाली है-आपके नैन और मस्तिष्क यह बोलें। मस्तक भी बहुत बोलता है। कोई का भाग्य मस्तक दिखाता है, समझते हैं यह बड़ा चमत्कारी है। तो ऐसी जब सर्विस करें तब जयजयकार हो। तो अब विश्व के आगे एक सैम्पल बनना है।

**(19.07.1972)**

एक तरफ मधुरता, दूसरे तरफ इतना ही फिर बेहद की वैराग्यवृत्ति।

वैराग्यवृत्ति से सिर्फ गम्भीरमूर्त रहेंगे? नहीं, वास्तविक गम्भीरता रमणीकता में समाई हुई है। वह तो अज्ञानी लोगों का गम्भीर रूप होगा तो बिल्कुल ही गम्भीर, रमणीकता का नाम-निशान नहीं होगा। लेकिन यथार्थ गम्भीरता का गुण रमणीकता के गुण सम्पन्न है। जैसे लोगों को भी समझाते हो कि हम आत्मा शान्तस्वरूप हैं लेकिन सिर्फ शान्तस्वरूप नहीं है लेकिन उस शान्तस्वरूप में आनन्द, प्रेम, ज्ञान सभी समाया हुआ है। तो ऐसे बेहद के वैराग्यमूर्त वाले और साथ-साथ मधुरता भी, यही विशेषता मधुवन निवासियों की है। तो जो बेहद के वैराग्यवृत्ति में रहने वाले हैं वह कब घबराते हैं क्या? डगमग हो सकते हैं? हिल सकते हैं? कितना भी जोर से हिलावें लेकिन बेहद के वैराग्यवृत्ति वाले 'नष्टोमोहा स्मृतिस्वरूप' होते हैं। तो नष्टोमोहा स्मृतिस्वरूप हो? कि थोड़ा बहुत देख कर कुछ अंश मात्र भी स्नेह कहो वा मोह कहा-लेकिन स्नेह का स्वरूप क्या होता है, इसको तो जानते हो ना? जिसके प्रति स्नेह होता है तो उसके प्रति सहयोगी बन जाना होता है। बाकी कोई रीति रस्म से स्नेह का रूप प्रकट करना-इसको स्नेह कहेंगे वा मोह कहेंगे?

(19.09.1972)

कोई दुर्गति की रीति-रस्म चाहे स्थूल, चाहे सूक्ष्म है, उनसे वैराग्य आना चाहिए। जैसे भक्ति के स्थूल साधनों से वैराग्य आ गया नोलेज के आधार पर, वैसे इन भक्ति-मार्ग के रस्म से भी ऐसे वैराग्य आना चाहिए। इस वैराग्य के बाद ही याद की स्पीड बढ़ सकेगी। नहीं तो कितना भी पुरुषार्थ करो। जैसे भक्त लोग कितना भी पुरुषार्थ करते हैं भगवान की याद में बैठने का, बैठ सकते हैं? कितना भी अपने को मारते हैं, कष्ट करते हैं, भिन्न रीति से समय देते हैं, सम्पत्ति लगाते हैं, फिर भी हो सकता है? यहाँ भी अगर दुर्गति मार्ग की रीति-रस्म है तो याद की यात्रा की स्पीड बढ़ नहीं सकती, अटूट याद हो नहीं सकती।

(22.11.1972)

अब जितना ही, बेहद के विशाल स्वरूप की सर्विस तीव्र रूप से करते जा रहे हो इतना ही बेहद की उपराम वृत्ति तीव्र चाहिए। आपकी बेहद की उपरामवृत्ति अथवा वैराग्य वृत्ति विश्व की आत्माओं में अल्पकाल के लिए होगी। तो अपने सुख से वैराग्य उत्पन्न करेगी। तब ही वैराग्य के बाद समाप्ति होगी। अपने आप से पूछो कि क्या हमारे अन्दर बेहद की वैराग्य वृत्ति रहती है? जो गायन है कि करते हुए अकर्ता। सम्पर्क-सम्बन्ध में रहते हुए कर्मातीत, क्या ऐसी स्टेज रहती है? कोई भी लगाव न हो और सर्विस भी लगाव से न हो लेकिन निमित्तभाव से हो; इससे ही कर्मातीत बन जायेंगे। अब अपने कार्य को समेटना शुरू करो। जब अभी से समेटना शुरू करेंगे तब ही जल्दी सम्पन्न कर सकेंगे। समेटने में भी टाइम लगता है।

**(03.02.1974)**

सदैव बेहद के वैराग्यवृत्ति वाले। बेहद के त्यागी, बेहद के सेवाधारी और बेहद के वैरागी। इन तीनों स्टेजिस से पार करने वाले ही विश्व-महाराजन् बन सकते हैं। साथ ही अन्त में लाइट हाउस और माइट हाउस बन सकते हैं। अपने आपको चेक करो कि तीनों स्टेजिस में से कौन-सी स्टेज तक पहुँचे हैं? स्वयं ही स्वयं का जज बनो। धर्मराजपुरी में जाने से पहले जो स्वयं, स्वयं का जज बनता है वही धर्मराजपुरी की सजा से बच जाता है।

**(27.09.1975)**

आज बाप-दादा कौन-सी सभा देख रहे हैं? यह है राज ऋषियों की सभा। अपने को सदा राज ऋषि समझते हुए चलते हो? एक तरफ राज्य, दूसरी तरफ ऋषि। दोनों के लक्षण अलग-अलग हैं। वह है भाग्य, वह है त्याग। वह है सर्वअधिकारी और वह फिर ऋषि अर्थात् बेहद के वैरागी। सर्व अधिकारी और बेहद के वैरागी। वह सर्व का प्यारा और वह सबसे न्यारा। दोनों ही लक्षण, बोल और कर्म में सदा साथ-साथ दिखाई देते हैं। वर्तमान स्वराज्य अर्थात् स्व का इन



सर्व-कर्मइन्द्रियों पर राज्य - इसको कहते हैं स्वराज्य और वही है भविष्य का डबल राज्य अधिकारी। डबल राज्य का नशा सदा रहता है? जितना राज्य का नशा उतना ही बेहद का वैराग्य अर्थात् ऋषि रूप सदा स्मृति में रहता है?

इस पुरानी देह और देह की दुनिया से बेहद के वैरागी बन गये हो? वा अभी भी यह पुरानी देह और दुनिया अपनी तरफ आकर्षित करती है? यह कब्रिस्तान अनुभव होता है? सभी मूर्च्छित हुई आत्मायें नजर आती हैं या सिर्फ कहने मात्र हैं? ये सब मरे पड़े हैं अर्थात् कब्रिस्तान है, जब तक वह अनुभव न होगा तो बेहद के वैरागी नहीं बन सकेंगे। तो जब तक यह दुनिया श्मशान है, ऐसा अनुभव नहीं होगा तो सदाकाल का बेहद का वैराग्य - यह अनुभव कैसे होगा?

(07.10.1975)

विश्व-परिवर्तन होने के पहले विश्व की सर्व-आत्माओं में वैराग्य वृत्ति होगी। और वैराग्य वृत्ति से ही बाप के परिचय को धारण कर सकेंगे कि हाँ हम आत्माओं का बाप आ चुका है। तो जैसे विश्व की आत्माओं में वैराग्य-वृत्ति ही परिवर्तन का आधार होगा वैसे ही जो निमित्त बनी हुई आत्मायें हैं उन्हीं में भी सम्पूर्ण परिवर्तन का आधार बेहद का वैराग्य बनेगा। तो संगठन में भी बेहद के वैराग्य-वृत्ति को लाने का पुरुषार्थ करो। एक-दो के साथी व सहयोगी बनो। जब वैराग्य-वृत्ति इमर्ज रूप में होगी तो पुराने संस्कार व स्वभाव बहुत जल्दी और सहज ही वैराग्य-वृत्ति के अन्दर मर्ज हो जायेंगे। सब सोचते हैं ना कि क्या होगा जो पुराना पन सब भूल जायेगा। मनुष्य को जब हद का वैराग्य होता है तो पुराने आकर्षण के संस्कार और स्वभाव आदि को समाप्त करने में वैराग्य-वृत्ति ही आधार बनेगी। इस से ही चेन्ज आयेगी।

अब ऐसी धरनी बनाओ और ऐसे बेहद के वैरागियों का संगठन बनाओ, जिन्हों के वाइब्रेशन्स और वायुमण्डल द्वारा अन्य आत्माओं में भी वह संस्कार इमर्ज हो जायें। जैसे सेवाधारियों का संगठन होता है वैसे बेहद के वैरागियों का

संगठन मजबूत होना चाहिए जिसको देखते ही अन्य आत्माओं को भी ऐसा वायब्रेशन आये। एक तरफ बेहद का वैराग्य होगा दूसरी तरफ बाप के समान बाप के लव में लवलीन होंगे, तब ही बेहद का वैराग्य आयेगा। एक सेकेण्ड भी और एक संकल्प भी इस लवलीन अवस्था से नीचे नहीं आयेगे। ऐसे लवली बाप के लवली बच्चों का संगठन हो। उनको कहेंगे लवली संगठन। एक तरफ अति लव दूसरी तरफ बेहद का वैराग्य दोनों का संगठन साथ-साथ समान दिखाई देगा, ऐसा संगठन बनाओ तो वह तारीख स्पष्ट दिखाई देगी। यह संगठन ही तारीख को प्रसिद्ध करेगा।

**(21.10.1975)**

बेहद की वैराग्य वृत्ति को टीचर्स अपने में अनुभव करती हैं? बेहद की वैराग्य वृत्ति है कि अपने सेन्टर्स व जिज्ञासुओं से लगाव नहीं। जब इस लगाव से बेहद का वैराग्य होगा तब जयजयकार होगी। सब स्थूल, सूक्ष्म साधनों से बेहद का वैराग्य। ऐसी धरनी बनी है अथवा थोड़ा सेन्टर्स से चेन्ज करें तो हिलेंगी? जिज्ञासुओं पर तरस नहीं पड़ेगा? जरा भी उन्हीं के प्रति संकल्प नहीं आयेगा? ऐसे अपने को चेक करना चाहिए कि ऐसा पेपर आये तो नष्टोमोहा हैं?

अपनी महीन रूप से चेकिंग करो कि अभी कोई ऑर्डर हो तो एवररेडी हैं? इस सेन्टर की सर्विस अच्छी है, तो सर्विस अच्छी से भी लगाव तो नहीं है? जब सबसे उपराम हों तब बेहद की वैराग्य वृत्ति कहेंगे। अपने शरीर से भी उपराम। जैसे कि निमित्त सेवा-अर्थ चलाते हैं।

लगाव की निशानी यह है कि बुद्धि बार-बार बाप से हट कर उस तरफ जाये तो समझो लगाव है। अपने आप से भी लगाव न हो। जो अपने में विशेषता है, कोई में हैन्डलिंग पॉवर अच्छी है वा कोई में वाणी की पॉवर है तो कहेंगी मैं ऐसी हूँ। परन्तु यह तो बाप-दादा की देन है। अपने ज्ञान की विशेषता, विशेषता कोई भी हो, उससे भी लगाव नहीं। इसमें भी अभिमान आ जाता है इससे तो यह बुद्धि में रखो कि - 'यह बाप से मिला हुआ वर्सा है। जो सर्व-आत्माओं के प्रति हमें मिला

है, जो दे रहे हैं, हम तो निमित्त हैं।' ऐसे बेहद के वैराग्य वृत्ति का संगठन टीचर्स का होना चाहिए। जो चलने से, देखने से और बोलने से सबको महसूस हो कि ये बेहद के वैरागी हैं। ज्ञान से सेवा करने में होशियार हैं, यह तो सब महसूस करते हैं। अब बेहद के वैराग्य का अनुभव करो, जो दूसरे भी अनुभव करें।

(25.10.1975)

इमानुसार कलियुगी दुनिया का दुःख और अशान्ति का नज़ारा देख बेहद के वैरागी बनते जायेंगे। कुछ भी होता है, अपनी सदा चढ़ती कला हो। दुनिया के लिए हाहाकार है और आपके लिए जय-जयकार है। आप जानते हो यह दुनिया हाहाकार होने वाली है। हाहाकार होना अर्थात् जाना। किसी भी परिस्थिति में घबराना नहीं। हमारे लिए तैयारी हो रही है। साक्षी होकर सब प्रकार का खेल देखो। कोई रोता है, चिल्लाता है, साक्षी होकर देखने से मज़ा आता है। 'क्या होगा?' यह क्वेश्चन भी नहीं उठता। यह होना ही है। ऐसे अटल हो ना? 'क्या होगा?' यह क्वेश्चन तो नहीं उठता। अनेक बार यह सब हलचल देखी है और अब भी देख रहे हो। क्या भी हो दुनिया में, लेकिन याद की भट्टी में रहने वाले सदा सेफ रहते हैं।

(07.12.1979)

सदा वाचा और मंसा दोनों साथ-साथ सेवा में रहे। वर्तमान समय विशेष भारतवासियों का क्या हालचाल देखा? अभी शमशानी वैराग की वृत्ति में हैं। ऐसे शमशानी वैराग वृत्ति वालों को बेहद की वैराग वृत्ति दिलाने के लिए - स्वयं बेहद के वैराग वृत्ति वाले बनो।

अपने आपको चेक करो। कभी राग कभी वैराग, दोनों में चलते हैं वा सदा बेहद के वैरागी बने हो? बेहद के वैरागी अर्थात् देह रूपी घर से भी बेघर। देह भी बाप की है न कि मेरी। इतना देह के भान से परे। बेहद के वैरागी कभी भी

संस्कार, स्वभाव, साधन किसी के भी वशीभूत नहीं होंगे। न्यारा बन, मालिक बन साधनों द्वारा सिद्धि स्वरूप बनेंगे। साधन को विधि बनायेंगे। विधि द्वारा स्व-उन्नति की वृद्धि की सिद्धि पायेंगे। सेवा से वृद्धि की सिद्धि प्राप्त करेंगे। निमित्त आधार होगा लेकिन अधीन नहीं होंगे। आधार के अधीन होना अर्थात् वशीभूत होना। वशीभूत शब्द का अर्थ ही है, जैसे भूत आत्मा परवश और परेशान करती है, ऐसे किसी भी साधन वा संस्कार वा स्वभाव वा सम्पर्क के वशीभूत हो जाते तो भूत समान परेशान और परवश हो जाते हैं। बेहद के वैरागी, सदा करावनहार करा रहे हैं, इसी मस्ती में रमता योगी से भी ऊपर -उड़ता योगी होगा। जैसे हृद के हठयोग की विधियों से धरनी, आग, पानी सबसे ऊंचा आसनधारी दिखाते हैं। उसको योग के सिद्धि स्वरूप मानते हैं। वह है अल्पकाल के हठयोग की विधि की सिद्धि। ऐसे बेहद के वैराग्य वृत्ति वाले इस विधि द्वारा देह भान की धरनी से ऊपर माया के भिन्न-भिन्न विकारों की अग्नि से ऊपर, भिन्न-भिन्न प्रकार के साधनों द्वारा संग के बहाव में आने से न्यारे बन जाते हैं। जैसे पानी का बहाव अपना बना देता है, अपनी तरफ खींच लेता है। ऐसे किसी भी प्रकार के अल्पकाल के बहाव अपने तरफ आकर्षित न करें। ऐसे पानी के बहाव से भी ऊपर इसको कहा जात - 'उड़ता योगी'। यह सब सिद्धियाँ बेहद के वैराग्य की विधि से प्राप्त होती हैं।

बेहद के वैरागी अर्थात् हर संकल्प, बोल और सेवा में बेहद की वृत्ति, स्मृति, भावना और कामना हो। हर संकल्प बेहद की सेवा में समर्पित हो। हर बोल में निःस्वार्थ भावना हो। हर कर्म में करावनहार करा रहे हैं-यह वायब्रेशन सर्व को अनुभव हो। इसको कहा जाता है - 'बेहद के वैरागी'। बेहद के वैरागी अर्थात् अपनापन मिट जाए। बाबा-पन आ जाए। जैसे अनहद जाप जपते हैं, ऐसे अनहद स्मृति स्वरूप हों। हर संकल्प में, हर श्वास में बेहद और बाबा समाया हुआ हो। तो हृद के वैरागी, शमशानी वैरागी आत्माओं को वर्तमान समय शान्ति और शक्ति देवा बन बेहद के वैरागी बनाओ।

(19.11.1984)

जितने भण्डारे भरपूर हैं उतने बेहद के वैरागी। प्राप्ति भी अति और वैराग्य वृत्ति भी उतनी ही, तब कहेंगे बेहद की वैराग्य वृत्ति है। हो ही नहीं तो वैराग्य वृत्ति कैसी। हो और होते हुए भी वैराग्य वृत्ति हो इसको कहा जाता है - बेहद के वैरागी।

**(09.01.1985)**

कई बार जब माया का तेज़ वार होता है, अल्पकाल का वैराग्य भी आता है लेकिन वह हृदय का अल्पकाल का वैराग्य होता है। बेहद का सदा का नहीं होता। मजबूरी से वैराग्य वृत्ति उत्पन्न होता है। इसलिए उस समय कह देते हैं कि इससे तो इसको छोड़ दें। मुझे वैराग्य आ गया है। सेवा भी छोड़ दें यह भी छोड़ दें, वैराग्य आता है लेकिन वह बेहद का नहीं होता। विजयी रत्न सदा हार में भी जीत, जीत में भी जीत अनुभव करेंगे। हृदय के वैराग्य को कहते हैं - किनारा करना। नाम वैराग्य कहते लेकिन होता किनारा है। तो विजयी रत्न किसी कार्य से, समस्या से, व्यक्ति से किनारा नहीं करेंगे। लेकिन सब कर्म करते हुए, सामना करते हुए, सहयोगी बनते हुए बेहद के वैराग्यवृत्ति में होंगे। जो सदाकाल का है।

**(25.11.1985)**

अपने को राजऋषि, श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो? राजऋषि अर्थात् राज्य होते हुए भी ऋषि अर्थात् सदा बेहद के वैरागी। स्थूल देश का राज्य नहीं है लेकिन स्व का राज्य है। स्व-राज्य करते हुए बेहद के वैरागी भी हो, तपस्वी भी हो क्योंकि जानते हो पुरानी दुनिया में है ही क्या। इस दुनिया को कहते ही हो असार संसार, कोई सार नहीं। जितना ही बनाने की कोशिश करते हैं, उतना ही बिगड़ता है। तो असार हुआ ना। तो असार संसार से स्वतः ही वैराग्य आ जाता है क्योंकि असार संसार से ब्राह्मणों का श्रेष्ठ संसार मिल गया। श्रेष्ठ संसार मिल गया तो असारसे वैराग्य स्वतः हो जायेगा। वैराग्य अर्थात् लगाव न हो। अगर लगाव होता है तो बुद्धि का झुकाव होता है। जिस तरफ लगाव होगा, बुद्धि उसी तरफ जायेगी।

इसलिए राजऋषि हो, राजे भी हो और साथ-साथ बेहद के वैरागी भी हो। ऋषि तपस्वी होते हैं। किसी भी आकर्षण में आकर्षित नहीं होने वाले। स्व-राज्य के आगे यह हद की आकर्षण क्या है? कुछ भी नहीं। तो अपनेको क्या समझते हो? राजऋषि। किसी भी प्रकार का लगाव ऋषि बनने नहीं देगा, तपस्वी बन नहीं सकेंगे। तपस्या में 'लगाव' ही विघ्न-रूप बन कर आता है। तपस्या भंग हो जाती है। इसलिए, माया की आकर्षण से सदा परे रहो। कोई भी सम्बन्ध में लगाव न हो।

**(23.01.1987)**

जहाँ जीना है वहाँ तक पढ़ाई और सम्पूर्ण बनने का अटेन्शन, बेहद के वैराग वृत्ति का अटेन्शन देना है - इसे भूल जाते हैं। ब्रह्मा बाप को देखा, अन्तिम सम्पूर्ण कर्मातीत स्थिति तक स्वयं पर, सेवा पर, बेहद की वैराग वृत्ति पर, स्टूडेंट लाइफ की रीति से अटेन्शन देकर निमित्त बन कर दिखाया। इसलिए आदि से अन्त तक हिम्मत में रहे, हिम्मत दिलाने के निमित्त बने। तो बाप के नम्बरवन मदद के पात्र बन नम्बरवन प्राप्ति को प्राप्त हुए। भविष्य निश्चित होते भी अलबेले नहीं रहे। सदा अपने तीव्र पुरुषार्थ के अनुभव बच्चों के आगे अन्त तक सुनाते रहे। मदद के सागर में ऐसे समा गये जो अब भी बाप समान हर बच्चे को अव्यक्त रूप से भी मददगार हैं। इसको कहते हैं - एक कदम की हिम्मत और पद्मगुणा मदद के पात्र बनना।

**(22.11.1987)**

ऋषि अर्थात् बेहद के वैराग वृत्ति वाले। एक तरफ सर्व प्राप्ति के अधिकार का नशा और दूसरे तरफ बेहद के वैराग का अलौकिक नशा। जितना ही श्रेष्ठ भाग्य उतना ही श्रेष्ठ त्याग। दोनों का बैलेन्स। इसको कहते हैं राजऋषि। ऐसे राजऋषि बच्चों का बैलेन्स देख रहे थे। अभी-अभी अधिकारीपन का नशा और अभी-अभी वैराग वृत्ति का नशा - इस प्रैक्टिस में कहाँ तक स्थित हो सकते हैं

अर्थात् दोनो स्थितियों का समान अभ्यास कहाँ तक कर रहे हैं - यह चेक कर रहे थे। नम्बरवार अभ्यासी तो सब बच्चे हैं ही। लेकिन समय प्रमाण इन दोनों अभ्यास को और भी ज्यादा से ज्यादा बढ़ाते चलो। बेहद के वैराग्य वृत्ति का अर्थ ही है - वैराग्य अर्थात् किनारा करना नहीं, लेकिन सर्व प्राप्ति होते हुए भी हृद की आकर्षण मन को वा बुद्धि को आकर्षण में नहीं लावे। बेहद अर्थात् बेहद में सम्पूर्ण सम्पन्न आत्मा बाप समान सदा सर्व कर्मन्द्रियों की राज्य अधिकारी। इन सूक्ष्म शक्तियो मन-बुद्धि-संस्कार के भी अधिकारी। संकल्प मात्र भी अधीनता न हो। इसको कहते हैं राजऋषि अर्थात् बेहद की वैराग्य वृत्ति। यह पुरानी देह वा देह की पुरानी दुनिया वा व्यक्त भाव, वैभवों का भाव - इस सब आकर्षण से सदा और सहज दूर रहने वाले।

तो राजऋषि अर्थात् सर्व के राज्य अधिकारी। राज्य अधिकारी सदा और सहज तब होगा जब ऋषि अर्थात् बेहद के वैराग्य वृत्ति के अभ्यासी होंगे। वैराग्य अर्थात् लगाव नहीं। सदा बाप के प्यारे। यह प्यारापन ही न्यारा बनाता है। बाप का प्यारा बन, न्यारा बन कार्य में आना - इसको कहते हैं बेहद का वैरागी। बाप का प्यारा नहीं तो न्यारा भी नहीं बन सकते, लगाव में आ जायेंगे। बाप का प्यारा और किसी व्यक्ति वा वैभव का प्यारा हो नहीं सकता। वह सदा आकर्षण से परे अर्थात् न्यारे होंगे। इसको कहते हैं निर्लेप स्थिति। कोई भी हृद की आकर्षण की लेप में आने वाले नहीं। रचना वा साधनों को निर्लेप होकर कार्य में लावें। ऐसे बेहद के वैरागी, सच्चे राजऋषि बने हो? ऐसे नहीं सोचना कि सिर्फ एक वा दो कमजोरी रह गई है, सिर्फ एक सूक्ष्म शक्ति वा कर्मन्द्रिय कन्ट्रोल में कम है, बाकी सब ठीक है। लेकिन जहाँ एक भी कमजोरी है तो वह माया का गेट है। चाहे छोटा, चाहे बड़ा गेट हो लेकिन गेट तो है ना। अगर गेट खुला रह गया तो मायाजीत जगतजीत कैसे बन सकेंगे?

एक तरफ एक राज्य, एक धर्म की सुनहरी दुनिया का आह्वान कर रहे हो और साथ-साथ फिर कमजोरी अर्थात् माया का भी आह्वान कर रहे हो तो रिजल्ट

क्या होगी? दुविधा में रह जायेंगे। इसलिए यह छोटभू बात नहीं समझो। समय पड़ा है, कर लेंगे। औरों में भी तो बहुत कुछ है, मेरे में तो सिर्फ एक ही बात है। दूसरे को देखते-देखते स्वयं न रह जाओ। 'सी ब्रह्मा फादर' कहा हुआ है, फालो फादर कहा हुआ है। सर्व के सहयोगी, स्नेही जरूर बनो, गुण ग्राहक जरूर बनो लेकिन फालो फादर। ब्रह्मा बाप की लास्ट स्टेज राजऋषि की देखी इतना बच्चों का प्यारा होते भी, सामने देखते हुए भी न्यारापन ही देखा ना। बेहद का वैराग - यही स्थिति प्रैक्टिकल में देखी। कर्मभोग होते भी कर्मन्द्रियों पर अधिकारी बन अर्थात् राजऋषि बन सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव कराया। इसलिए कहते हैं - 'फालो फादर'। तो अपने राज्य अधिकारियों, राज्य कारोबारियों को सदा देखना है। कोई भी राज्य कारोबारी कहाँ धोखा न दें। समझा?

(27.11.1987)

सदा अपने को 'राजऋषि' समझते हो? एक तरफ है राज्य, दूसरे तरफ है वैराग - दोनों का बैलेन्स हो। बेहद का वैराग, वैराग नहीं लेकिन प्राप्तिस्वरूप बना देता है क्योंकि पुरानी दुनिया से वैराग लाते हो और नई दुनिया के मालिक बन जाते हो। तो नाम वैराग है लेकिन मिलती प्राप्ति है। छोड़ने में ही लेना है। एक देते हो और पदम् लेते हो! तो बेहद का वैराग राज्य भाग्य दिलाने वाला है। एक जन्म के लिए वैराग अनेक जन्मों के लिए सदा श्रेष्ठ भाग्य। ऐसे राजऋषि हो? राजऋषि कुमार और कुमारियों का ही गायन है। ऐसी राजऋषि आत्माओं को विश्व की आत्मायें दिल से प्यार करती है। चैतन्य से भी ज्यादा आपके जड़ चित्रों को प्यार से याद करते हैं। क्योंकि त्याग का भाग्य प्राप्त हुआ है। तो ऐसे राजऋषि आत्मायें हैं - इस नशे में सदा रहो।

(27.12.1987)

अभी थोड़ा समय को आगे बढ़ने दो। थोड़े समय में जब अति और अन्त



- दोनों ही अनुभव होगा तो चारों ओर अन्जान आत्मायें हृद के वैराग्य वृत्ति में आयेंगी और आप भाग्यवान आत्मायें बेहद के वैराग्य वृत्ति के अनुभव में होगी। अभी तो दुनिया वालों में भी वैराग्य नहीं है। अगर थोड़ी-बहुत रिहर्सल होती भी है तो और ही अलबेलेपन की नींद में सो जाते हैं कि यह तो होता ही रहता है। लेकिन जब 'अति' और 'अन्त' के नजारे सामने आयेंगे तो स्वतः ही हृद की वैराग्य वृत्ति उत्पन्न होगी और अति टेन्शन (तनाव) होने के कारण सभी का अटेन्शन (ध्यान) एक बाप तरफ जायेगा। उस समय सर्व आत्माओं की दिल से आवाज निकलेगी कि सब का रचयिता, सभी का बाप एक है और बुद्धि अनेक तरफ से निकल एक तरफ स्वतः ही जायेगी। ऐसे समय पर आप भाग्यवान आत्माओं के बेहद के वैराग्य वृत्ति की स्थिति स्वतः और निरन्तर हो जायेगी और हर एक के मस्तक से भाग्य की रेखायें स्पष्ट दिखाई देंगी। अभी भी श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चों की बुद्धि में सदा क्या रहता? 'भाग्यवान' और 'भाग्य'।

**(07.03.1988)**

स्व-उन्नति के लिए स्व पर जब रहमदिल बनते हैं तो रहमदिल आत्मा को सदा बेहद की वैराग्यवृत्ति स्वतः ही आती है। स्व के प्रति भी रहम हो कि मैं कितनी ऊंच-ते-ऊंच बाप की वही आत्मा हूँ और वही बाप समाम बनने के लक्ष्यधारी हूँ। उस प्रमाण ओरिजनल श्रेष्ठ स्वभाव वा संस्कार में अगर कोई कमी है तो अपने ऊपर दिल का रहम, कमियों से वैराग्य दिला देगा।

**(31.03.1990)**

तपस्या का सदा और सहज फाउन्डेशन है - 'बेहद का वैराग्य'। बेहद का वैराग्य अर्थात् चारों ओर के किनारे छोड़ देना। क्योंकि किनारे को सहारा बना दिया है। समय प्रमाण प्यारे बने और समय प्रमाण श्रीमत पर निमित्त बनी हुई आत्माओं के इशारे प्रमाण सेकेण्ड में बुद्धि प्यारे से फिर न्यारी बन जाये, वह नहीं

होती। जितना जल्दी प्यारे बनते हो, उतने न्यारे नहीं बनते हो। प्यारे बनने में होशियार है, न्यारे बनने में सोचते हैं, हिम्मत चाहिए। न्यारा बनना ही किनारा छोड़ना है और किनारा छोड़ना ही बेहद की वैराग्य वृत्ति है। किनारों को सहारा बनाए पकड़ना आता है लेकिन छोड़ने में क्या करते हो? लम्बा क्वेश्चन मार्क लगा देते हो। सेवा का इन्चार्ज बनना बहुत अच्छा आता है लेकिन इन्चार्ज के साथ-साथ स्वयं की और औरों की बैटरी चार्ज करने में मुश्किल लगता है। इसलिए वर्तमान समय तपस्या द्वारा वैराग्य वृत्ति की अति आवश्यकता है।

बहुत-बहुत भाग्यवान हो। अनेक प्रकार की मेहनत से छूट गये। दुनिया वालों को समय करायेगा और समय पर मजबूरी से करेगा। बच्चों को बाप समय के पहले तैयार करते हैं और बाप की मोहब्बत से करते हो। अगर मोहब्बत से नहीं किया वा थोड़ा किया तो क्या होगा? मजबूरी से करना ही पड़ेगा। बेहद का वैराग्य धारण करना ही होगा लेकिन मजबूरी से करने का फल नहीं मिलता। मोहब्बत का प्रत्यक्षफल भविष्य फल बनता है और मजबूरी वालों को कहाँ से क्रॉस करना पड़ेगा! क्रॉस करना भी क्रॉस में चढ़ने के समान है। तो क्या पसन्द है?

**(13.12.1990)**

अपने को राजऋषि समझते हो? राज भी और ऋषि भी। स्वराज्य मिला तो राजा भी हो और साथ-साथ पुरानी दुनिया का ज्ञान मिला तो पुरानी दुनिया से बेहद के वैरागी भी हो इसलिये ऋषि भी हो। एक तरफ़ राज्य, दूसरे तरफ़ ऋषि अर्थात् बेहद के वैरागी। तो दोनों ही हो? बेहद का वैराग्य है या थोड़ा-थोड़ा लगाव है। अगर कहाँ भी, चाहे अपने में, चाहे व्यक्ति में, चाहे वस्तु में कहाँ भी लगाव है तो राजऋषि नहीं। न राजा है, न ऋषि है। क्योंकि स्वराज्य है तो मन-बुद्धि-संस्कार सब अपने वश में है। लगाव हो नहीं सकता। अगर कहाँ भी संकल्प मात्र थोड़ा भी लगाव है, तो राजऋषि नहीं कहेंगे। अगर लगाव है तो दो नाव में पाँव हुआ ना। थोड़ा पुरानी दुनिया में, थोड़ा नई दुनिया में। इसलिए एक बाप,

दूसरा न कोई। क्योंकि दो नाव में पांव रखने वाले क्या होते हैं? न यहाँ के, न वहाँ के। इसलिये राजऋषि राजा बनो और बेहद के वैरागी भी बनो।

(02.12.1993)

यथार्थ वैराग्य वृत्ति का सहज अर्थ है-चाहे आत्माओं के सम्पर्क में आयें, चाहे साधनों के सम्बन्ध में आयें, चाहे सेवा के चांस में चांसलर बनने का भाग्य मिले लेकिन सर्व के सम्बन्ध-सम्पर्क में जितना न्यारा, उतना प्यारा-इसका बैलेन्स रहे। होता क्या है? कभी न्यारेपन की परसेन्टेज़ बढ़ जाती और कभी प्यारेपन की परसेन्टेज़ बढ़ जाती। प्यारापन का अर्थ है निमित्त भाव, निर्मान भावा लेकिन इसके बदले मेरेपन का भान आ जाता। ये मेरा ही काम है, मेरा ही स्थान है, मुझे ही सर्व साधन भाग्य अनुसार मिले हुए हैं, इतनी मेहनत से मैंने ये साधन, स्थान वा सेवा वा सेवा साथी (स्टूडेन्ट्स भी साथी हैं) बनायें हैं। ये मेरा है, क्या मेरी मेहनत की कोई वैल्यू नहीं है? ये निमित्त भाव और मेरेपन के भाव में अन्तर है या एक ही है? ये मेरापन रॉयल रूप से बढ़ गया है। ये मेरेपन की रॉयल भाषा, रॉयल संकल्प बाप से रुहरिहान में भी बापदादा बहुत सुनते हैं। बहुत प्यार से बाप को या निमित्त आत्माओं को मनाने या मनवाने आते हैं - बाबा आप ही इसमें मेरे को मदद करना, आप क्या समझते हो कि ये मेरा काम नहीं है, मेरी ज़िम्मेदारी नहीं है, मेरा अधिकार मेरे को ही मिलना चाहिये। बाप को भी ज्ञान देने के लिये बहुत होशियारी करते हैं। बापदादा मुस्कराते रहते हैं। निमित्त हैं, जो मिला, जैसे मिला, जहाँ बिठायेंगे, जो खिलायेंगे, जो करायेंगे वही करेंगे। ये पहला-पहला सभी का वायदा है। वायदा है ना? ये वायदा है या सिर्फ खाने-पीने के लिये है? मेरेपन के भाव का वैराग्य ही बेहद का वैराग्य है। नये-नये प्रकार के मेरेपन और इमर्ज हो रहे हैं। माया वर्तमान समय नये-नये प्रकार के मेरेपन की छाया डाल रही है। इसलिये समय की समीपता प्रत्यक्ष रूप में नहीं आ रही है। ज्ञानी, चाहे अज्ञानी, दोनों जानते हैं और कहते भी हैं कि दुनिया की हालतें बहुत खराब है, ये दुनिया कहाँ तक चलेगी,

कैसे चलेगी? लेकिन फिर भी दुनिया चल रही है। समय की समीपता का फाउण्डेशन है - बेहद की वैराग्य वृत्ति। बापदादा ने चेक किया बेहद की वैराग्य वृत्ति के बजाय नये-नये प्रकार के छोटे-छोटे लगाव का विस्तार बहुत बड़ा है। इस विस्तार ने सार को छिपा लिया है। समझा? अब क्या करना है?

बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल बनाओ। जैसे सेवा का वायुमण्डल बनाते हो ना, प्रोग्राम बनाते हो। सिर्फ दिमाग तक ये वृत्ति नहीं, दिल तक पहुँचो। सबके दिमाग में तो है-होना चाहिये, करना चाहिये लेकिन दिल में ये लहर उत्पन्न हो जाये इसकी आवश्यकता है। समझा?

**(05.12.1994)**

काम दिया था कि बेहद के वैराग्य वृत्ति पर स्वयं से भी चर्चा करो और आपस में भी चर्चा करो और प्रैक्टिकल में इस साधना के बीज को प्रत्यक्ष करो। तो किया? कि एक दिन सिर्फ डिबेट कर ली, वर्कशॉप तो हो गई लेकिन वर्क में नहीं आई। तो वर्तमान समय के प्रमाण अभी अपनी सेवा वा सेवा-स्थानों की दिनचर्या बेहद के वैराग्य वृत्ति की बनाओ।

अब कोई नवीनता दिखाओ। नया वर्ष तो शुरू हो गया। बापदादा को आदि का बेहद वैराग्य सदा याद आता है। उसी समय का फल आप लोग हो। अगर बेहद की वैराग्य वृत्ति नहीं होती तो स्थापना की वृद्धि इतनी नहीं हो सकती। ब्रह्मा बाप ने अन्त तक बड़ी आयु होते हुए भी, तन का हिसाब चुकतू करते हुए भी बेहद के वैराग्य की स्थिति प्रत्यक्ष दिखाई। साधनों को स्व प्रति स्वीकार नहीं किया। सेवा के प्रति अलग चीज़ है। स्व प्रति स्वीकार करना और सेवा प्रति कार्य में लगाना-अन्तर तो जानते हो ना? स्व प्रति बेहद का वैराग्य हो, सेवा प्रति साधन को कार्य में लगाओ। लेकिन साधन अलबेलापन नहीं लाये। तो ये फालो फादर करना ही है ना कि जो और आने हैं उनको करना है? आप लोगों को करना है।

**(26.01.1995)**

समय समीप है तो समय की समीपता के अनुसार अब कौन सी लहर होनी चाहिए? (वैराग्य की) कौन सा वैराग्य - हद का या बेहद का? जितना सेवा का उमंग-उत्साह है, उतना समय की आवश्यकता प्रमाण स्व-स्थिति में बेहद का वैराग्य कहाँ तक है? क्योंकि आपके सेवा की सफलता है जल्दी से जल्दी प्रजा तैयार हो जाए। इसलिए सेवा करते हो ना? तो जब तक आप निमित्त आत्माओं में बेहद की वैराग्य वृत्ति नहीं है, तो अन्य आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति नहीं आ सकती और जब तक वैराग्य वृत्ति नहीं होगी तो जो चाहते हो कि बाप का परिचय सबको मिले, वह नहीं मिल सकता। बेहद का वैराग्य सदाकाल का वैराग्य है। अगर समय प्रमाण वा सरकमस्टांश प्रमाण वैराग्य आता है तो समय नम्बरवन हो गया और आप नम्बर दो हो गये। परिस्थिति या समय ने वैराग्य दिलाया। परिस्थिति खत्म, समय पास हो गया तो वैराग्य पास हो गया। तो उसको क्या कहेंगे - बेहद का वैराग्य या हद का? तो अभी बेहद का वैराग्य चाहिए। अगर वैराग्य खण्डित हो जाता है तो उसका मुख्य कारण है - देह-भान। जब तक देह-भान का वैराग्य नहीं है तब तक कोई भी बात का वैराग्य सदाकाल नहीं होता है, अल्पकाल का होता है। सम्बन्ध से वैराग्य - यह बड़ी बात नहीं है, वह तो दुनिया में भी कईयों को दिल से वैराग्य आ जाता है लेकिन यहाँ देह-भान के जो भिन्न-भिन्न रूप हैं, उन भिन्न-भिन्न रूपों को तो जानते हो ना? कितने देह-भान के रूप हैं, उसका विस्तार तो जानते हो लेकिन इस अनेक देह-भान के रूपों को जानकर, बेहद के वैराग्य में रहना। देह-भान, देही-अभिमान में बदल जाए। जैसे देह-भान एक नेचुरल हो गया, ऐसे देही-अभिमानी नेचुरल हो जाए क्योंकि हर बात में पहला शब्द देह ही आता है। चाहे सम्बन्ध है तो भी देह का ही सम्बन्ध है, पदार्थ हैं तो देह के पदार्थ हैं। तो मूल आधार देह-भान है। जब तक किसी भी रूप में देह-भान है तो वैराग्य वृत्ति नहीं हो सकती। और बापदादा ने देखा कि वर्तमान समय जो देह-भान का विघ्न है उसका कारण है कि देह के जो पुराने संस्कार हैं, उससे वैराग्य नहीं है। पहले देह के पुराने संस्कारों से वैराग्य चाहिए। संस्कार स्थिति से नीचे ले आते हैं। संस्कार के

कारण सेवा में वा सम्बन्ध-सम्पर्क में विघ्न पड़ते हैं। तो रिजल्ट में देखा कि देह के पुराने संस्कार से जब तक वैराग्य नहीं आया है, तब तक बेहद का वैराग्य सदा नहीं रहता। संस्कार भिन्न-भिन्न रूप से अपने तरफ आकर्षित कर लेते हैं। तो जहाँ किसी भी तरफ आकर्षण है, वहाँ वैराग्य नहीं हो सकता। तो चेक करो कि मैं अपने पुराने वा व्यर्थ संस्कार से मुक्त हूँ? कितनी भी कोशिश करेंगे, करते भी हैं कि वैराग्य वृत्ति में रहें लेकिन संस्कार कोई-कोई के पास या मेजारिटी के पास किस न किस रूप में ऐसे प्रबल हैं जो अपनी तरफ खींचते हैं। तो पहले पुराने संस्कार से वैराग्य। संस्कार न चाहते भी इमर्ज हो जाते हैं क्यों? चाहते नहीं हो लेकिन सूक्ष्म में संस्कारों को भस्म नहीं किया है। कहाँ न कहाँ अंश मात्र रहे हुए हैं, छिपे हुए हैं वह समय पर न चाहते हुए भी इमर्ज हो जाते हैं। फिर कहते हैं - चाहते तो नहीं थे लेकिन क्या करें, हो गया, हो जाता है ..... यह कौन बोलता है - देह-भान या देही-अभिमान?

तो बापदादा ने देखा कि संस्कारों से वैराग्य वृत्ति में कमजोरी है। खत्म किया है लेकिन अंश भी नहीं हो, ऐसा खत्म नहीं किया है और जहाँ अंश है तो वंश तो होगा ही। आज अंश है, समय प्रमाण वंश का रूप ले लेता है। परवश कर देता है। कहने में तो सभी क्या कहते हैं कि जैसे बाप नॉलेजफुल है वैसे हम भी नॉलेजफुल हैं, लेकिन जब संस्कार का वार होता है तो नॉलेजफुल हैं या नॉलेज पुल हैं? क्या हैं? नॉलेजफुल के बजाए नॉलेज पुल बन जाते हो। उस समय किसी से भी पूछो तो कहेंगे - हाँ, समझती तो मैं भी हूँ, समझता तो मैं भी हूँ, होना नहीं चाहिए, करना नहीं चाहिए लेकिन हो जाता है। तो नॉलेजफुल हुए या नॉलेज पुल हुए? (नॉलेजपुल अर्थात् नॉलेज को खींचने वाले) जो नॉलेजफुल है उसे कोई भी संस्कार, सम्बन्ध, पदार्थ वार नहीं कर सकता।

अभी जो बापदादा ने समय दिया है, उसमें वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो क्योंकि सेवा की खींचातान में वैराग्यवृत्ति खत्म हो जाती है। वैसे सेवा में खुशी भी

मिलती है, शक्ति भी मिलती है और प्रत्यक्षफल भी मिलता है लेकिन बेहद का वैराग्य खत्म भी सेवा में ही होता है। इसलिए अब अपने अन्दर इस वैराग्य वृत्ति को जगाओ। कल्प पहले भी बने तो आप ही थे कि और थे? आप ही हैं ना। सिर्फ मर्ज है, उसको इमर्ज करो। जैसे सेवा के प्लैन की प्रैक्टिकल में इमर्ज करते हो, तब सफलता मिलती है ना। ऐसे अभी बेहद के वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। चाहे कितने भी साधन प्राप्त हैं और साधन तो आपको दिनप्रतिदिन ज्यादा ही मिलने हैं लेकिन बेहद के वैराग्य वृत्ति की साधना मर्ज नहीं हो, इमर्ज हो। साधन और साधना का बैलेन्स, क्योंकि आगे चलकर के प्रकृति आपकी दासी होगी। सत्कार मिलेगा, स्वमान मिलेगा। लेकिन सब कुछ होते वैराग्य वृत्ति कम नहीं हो। तो बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल स्वयं में अनुभव करते हो कि सेवा में बिजी हो गये हो? जैसे दुनिया वालों को सेवा का प्रभाव दिखाई देता है ना! ऐसे बेहद के वैराग्य वृत्ति का प्रभाव दिखाई दे। आदि में आप सभी की स्थिति क्या थी? पाकिस्तान में जब थे, सेवा नहीं थी, साधन थे लेकिन बेहद के वैराग्यवृत्ति के वायुमण्डल ने सेवा को बढ़ाया। तो जो भी डायमण्ड जुबली वाले हैं उन्हीं में आदि संस्कार हैं, अब मर्ज हो गये हैं। अब फिर से इस वृत्ति को इमर्ज करो। आदि रत्नों के बेहद के वैराग्य वृत्ति ने स्थापना की, अभी नई दुनिया की स्थापना के लिए फिर से वही वृत्ति, वही वायुमण्डल इमर्ज करो। तो सुना क्या ज़रूरत है?

साधन, बेहद की वैराग्य वृत्ति को मर्ज नहीं करो। अभी विश्व अति में जा रही है तो अभी आवश्यकता है - सच्चे वैराग्य-वृत्ति की और वह वायुमण्डल बनाने वाले आप हो, पहले स्वयं में, फिर विश्व में।

जो बापदादा कहते हैं, चाहते हैं सेकण्ड में अशरीरी हो जायें - उसका फाउण्डेशन यह बेहद की वैराग्य वृत्ति है, नहीं तो कितनी भी कोशिश करेंगे लेकिन सेकण्ड में नहीं हो सकेंगे। युद्ध में ही चले जायेंगे और जहाँ वैराग्य है तो ये वैराग्य है योग्य धरनी, उसमें जो भी डालो उसका फल फौरन निकलता। तो क्या

करना है? सभी को फील हो कि बस हमको भी अभी वैराग्य वृत्ति में जाना है। अच्छा। समझा क्या करना है?

**(03.04.1996)**

बेहद में सकाश दो। कई बच्चे अपने से भी पूछते हैं और आपस में भी पूछते हैं कि बेहद का वैराग्य कैसे आयेगा? दिखाई तो देता नहीं है, लेकिन बेहद की सेवा में अपने को बिजी रखो तो बेहद का वैराग्य स्वतः ही आयेगा क्योंकि यह सकाश देने की सेवा निरन्तर कर सकते हो, इसमें तबियत की बात, समय की बात - यह सहज हो जाती है। दिन रात इस बेहद की सेवा में लग सकते हो। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा रात को भी कैसे आंख खुली और बेहद की सकाश देने की सेवा होती रही। तो यह बेहद की सेवा इतना बिजी कर देगी जो बेहद का वैराग्य स्वतः ही दिल से आयेगा। प्रोग्राम से नहीं। यह करें, यह करें - यह प्लैन तो बनाते हो, लेकिन बिजी बेहद की सेवा में रहना - यह सबसे सहज साधन है क्योंकि जब बेहद को सकाश देंगे तो नजदीक वाले तो ऑटोमेटिक सकाश लेते रहेंगे। इस बेहद की सकाश देने से वायुमण्डल ऑटोमेटिक बनेगा।

**(28.11.1997)**

अभी समय प्रमाण सबको बेहद के वैराग्य वृत्ति में जाना ही होगा। लेकिन बापदादा समझते हैं कि बच्चों का समय शिक्षक नहीं बनें, जब बाप शिक्षक है तो समय पर बनना - यह समय को शिक्षक बनाना है। उसमें मार्क्स कम हो जाती हैं। अभी भी कई बच्चे कहते हैं - समय सिखा देगा, समय बदला देगा। समय के अनुसार तो सारे विश्व की आत्मायें बदलेंगी लेकिन आप बच्चे समय का इन्तजार नहीं करो। समय को शिक्षक नहीं बनाओ। आप विश्व के शिक्षक के मास्टर विश्व शिक्षक हो, रचता हो, समय रचना है तो हे रचता आत्मायें रचना को शिक्षक नहीं बनाओ। ब्रह्मा बाप ने समय को शिक्षक नहीं बनाया, बेहद का वैराग्य आदि से



अन्त तक रहा। आदि में देखा इतना तन लगाया, मन लगाया, धन लगाया, लेकिन जरा भी लगाव नहीं रहा। तन के लिए सदा नेचुरल बोल यही रहा - बाबा का रथ है। मेरा शरीर है, नहीं। बाबा का रथ है। बाबा के रथ को खिलाता हूँ, मैं खाता हूँ, नहीं। तन से भी बेहद का वैराग्य। मन तो मनमनाभव था ही। धन भी लगाया, लेकिन कभी यह संकल्प भी नहीं आया कि मेरा धन लग रहा है। कभी वर्णन नहीं किया कि मेरा धन लग रहा है या मैंने धन लगाया है। बाबा का भण्डारा है, भोलेनाथ का भण्डारा है। धन को मेरा समझकर पर्सनल अपने प्रति एक रूपये की चीज़ भी यूज नहीं की। कन्याओं, माताओं की जिम्मेवारी है, कन्याओं-माताओं को विल किया, मेरापन नहीं। समय, श्वास अपने प्रति नहीं, उससे भी बेहद के वैरागी रहे। इतना सब कुछ प्रकृति दासी होते हुए भी कोई एकस्ट्रा साधन यूज नहीं किया। सदा साधारण लाइफ में रहे। कोई स्पेशल चीज़ अपने कार्य में नहीं लगाई। वस्त्र तक, एक ही प्रकार के वस्त्र अन्त तक रहे। चेंज नहीं किया। बच्चों के लिए मकान बनाये लेकिन स्वयं यूज नहीं किया, बच्चों के कहने पर भी सुनते हुए उपराम रहे। सदा बच्चों का स्नेह देखते हुए भी यही शब्द रहे - सब बच्चों के लिए है। तो इसको कहा जाता है बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रत्यक्ष जीवन में रही। अन्त में देखो बच्चे सामने हैं, हाथ पकड़ा हुआ है लेकिन लगाव रहा? बेहद की वैराग्य वृत्ति। स्नेही बच्चे, अनन्य बच्चे सामने होते हुए फिर भी बेहद का वैराग्य रहा। सेकण्ड में उपराम वृत्ति का, बेहद के वैराग्य का सबूत देखा। एक ही लगन सेवा, सेवा और सेवा..... और सभी बातों से उपराम। इसको कहा जाता है बेहद का वैराग्य। अभी समय प्रमाण बेहद के वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। बिना बेहद के वैराग्य वृत्ति के सकाश की सेवा हो नहीं सकती। फालो फादर करो। साकार में ब्रह्मा बाप रहा, निराकार की तो बात छोड़ो। साकार में सर्व प्राप्ति का साधन होते हुए, सर्व बच्चों की जिम्मेवारी होते हुए, सरकमस्टांश, समस्यायें आते हुए पास हो गये ना! पास विद ऑनर का सर्टीफिकेट ले लिया। विशेष कारण बेहद की वैराग्य वृत्ति। अभी सूक्ष्म सोने की जंजीर के लगाव, बहुत महीन सूक्ष्म लगाव बहुत है।

कई बच्चे तो लगाव को समझते भी नहीं हैं कि यह लगाव है। समझते हैं - यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है। मुक्त होना है, नहीं। लेकिन ऐसे तो चलता ही है। अनेक प्रकार के लगाव बेहद के वैरागी बनने नहीं देते हैं। चाहना है बनें, संकल्प भी करते हैं - बनना ही है। लेकिन चाहना और करना दोनों का बैलेन्स नहीं है। चाहना ज्यादा है, करना कम है। करना ही है - यह वैराग्य वृत्ति अभी इमर्ज नहीं है। बीच-बीच में इमर्ज होती है, फिर र्ज हो जाती है। समय तो करेगा ही लेकिन पास विद ऑनर नहीं बन सकते। पास होंगे लेकिन पास विद ऑनर नहीं। समय की रफ्तार तेज है, पुरुषार्थ की रफ्तार कम है। मोटा-मोटा पुरुषार्थ तो है लेकिन सूक्ष्म लगाव में बंध जाते हैं।

अभी समय प्रमाण लगाव-मुक्त बेहद के वैरागी बनो। मन से वैराग्य हो। प्रोग्राम प्रमाण वैराग्य जो आता है वह अल्पकाल का होता है। चेक करो - अपने सूक्ष्म लगाव को। मोटी-मोटी बातें अभी खत्म हुई हैं?

**(18.01.1998)**

बापदादा एक बात का फिर से अटेन्शन दिला रहे हैं कि वर्तमान वायुमण्डल के अनुसार मन में, दिल से अभी वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। बापदादा ने हर बच्चे को चाहे प्रवृत्ति में है, चाहे सेवाकेन्द्र पर है, चाहे कहाँ भी रहते हैं, स्थूल साधन हर एक को दिये हैं, ऐसा कोई बच्चा नहीं है जिसके पास खाना, पीना, रहना इसके साधन नहीं हो। जो बेहद के वैराग्य की वृत्ति में रहते हुए आवश्यक साधन चाहिए, वह सबके पास हैं। अगर कोई को कमी है तो वह उसके अपने अलबेलेपन या आलस्य के कारण है। बाकी ड्रामानुसार बापदादा जानते हैं कि आवश्यक साधन सबके पास हैं। जो आवश्यक साधन हैं वह तो चलने ही हैं। लेकिन कहाँ-कहाँ आवश्यकता से भी ज्यादा साधन हैं। साधना कम है और साधन का प्रयोग करना या कराना ज्यादा है। इसलिए बापदादा आज बाप समान बनने के दिवस पर विशेष अन्डरलाइन करा रहे हैं - कि साधनों के प्रयोग का अनुभव बहुत किया, जो किया

वह भी बहुत अच्छा किया, अब साधना को बढ़ाना अर्थात् बेहद की वैराग्य वृत्ति को लाना। ब्रह्मा बाप को देखा लास्ट घड़ी तक बच्चों को साधन बहुत दिये लेकिन स्वयं साधनों के प्रयोग से दूर रहे। होते हुए दूर रहना - उसे कहेंगे वैराग्य। लेकिन कुछ है ही नहीं और कहे कि हमको तो वैराग्य है, हम तो हैं ही वैरागी, तो वह कैसे होगा। वह तो बात ही अलग है। सब कुछ होते हुए नॉलेज और विश्व कल्याण की भावना से, बाप को, स्वयं को प्रत्यक्ष करने की भावना से अभी साधनों के बजाए बेहद की वैराग्य वृत्ति हो। जैसे स्थापना के आदि में साधन कम नहीं थे, लेकिन बेहद के वैराग्य वृत्ति की भट्टी में पड़े हुए थे। यह 14 वर्ष जो तपस्या की, यह बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल था। बापदादा ने अभी साधन बहुत दिये हैं, साधनों की अभी कोई कमी नहीं है लेकिन होते हुए बेहद का वैराग्य हो। विश्व की आत्माओं के कल्याण के प्रति भी इस समय इस विधि की आवश्यकता है क्योंकि चारों ओर इच्छायें बढ़ रही हैं, इच्छाओं के वश आत्मायें परेशान हैं, चाहे पदमपति भी हैं लेकिन इच्छाओं से वह भी परेशान हैं। वायुमण्डल में आत्माओं की परेशानी का विशेष कारण यह हृद की इच्छायें हैं। अब आप अपने बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा उन आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति फैलाओ। आपके वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के बिना आत्मायें सुखी, शान्त बन नहीं सकती, परेशानी से छूट नहीं सकती। आप वृक्ष की जड़ हैं, ब्राह्मणों का स्थान वृक्ष में कहाँ दिखाया है? जड़ में दिखाया है ना! तो आप फाउण्डेशन हैं, आपकी लहर विश्व में फैलेगी इसलिए बापदादा विशेष साकार में ब्रह्मा बाप समान बनने की विधि, वैराग्य वृत्ति की तरफ विशेष अटेंशन दिला रहा है। हर एक से अनुभव हो कि यह साधनों वश नहीं, साधना में रहने वाले हैं। होते हुए वैराग्य वृत्ति हो। आवश्यक साधन यूज करो लेकिन जितना हो सकता है उतना दिल के वैराग्य वृत्ति से, साधनों के वशीभूत होकर नहीं। अभी साधना का वायुमण्डल चारों ओर बनाओ। समय समीप के प्रमाण अभी सच्ची तपस्या वा साधना है ही बेहद का वैराग्य। सेवा का विस्तार इस वर्ष में बहुत किया। इस वर्ष चारों ओर बड़े-बड़े प्रोग्राम किये और सेवा से सहयोगी आत्मायें भी बहुत

बने हैं, समीप आये हैं, सम्पर्क में आये हैं, लेकिन क्या सिर्फ सहयोगी बनाना है? यहाँ तक रखना है क्या? सहयोगी आत्मायें अच्छी-अच्छी हैं, अब उन सहयोगी क्वालिटी वाली आत्माओं को और संबंध में लाओ। अनुभव कराओ, जिससे सहयोगी से सहज योगी बन जाएं। इसके लिए एक तो साधना का वायुमण्डल और दूसरा बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल हो तो इससे सहज सहयोगी सहज योगी बन जायेंगे। उन्हीं की सेवा भले करते रहो लेकिन साथ में साधना, तपस्या का वायुमण्डल आवश्यक है।

अभी चारों ओर पावरफुल तपस्या करनी है, जो तपस्या मन्सा सेवा के निमित्त बनें, ऐसी पावरफुल सेवा अभी तपस्या से करनी है। अभी मन्सा सेवा अर्थात् संकल्प द्वारा सेवा की टचिंग हो, उसकी आवश्यकता है। समय समीप आ रहा है, निरन्तर स्थितियाँ और निरन्तर पाँवरफुल वायुमण्डल की आवश्यकता है। बाप समान बनना है तो पहले बेहद की वैराग्य वृत्ति धारण करो। यही ब्रह्मा बाप की अन्त तक विशेषता देखी। न वैभव में लगाव रहा, न बच्चों में.. सबसे वैराग्य वृत्ति। तो आज के दिन का बाप समान बनने का पाठ पक्का करना। बस ब्रह्मा बाप समान बनना ही है। ऐसा दृढ़ निश्चय अवश्य आगे बढ़ायेगा।

अभी क्या याद रखा? कौन सी बात को अन्डरलाइन किया? बेहद का वैराग्य। अभी आत्माओं को इच्छाओं से बचाओ। बिचारे बहुत दुःखी हैं। बहुत परेशान हैं। तो अभी रहमदिल बनो। रहम की लहर बेहद के वैराग्य वृत्ति द्वारा फैलाओ। अभी सभी ऊंचे ते ऊंचे परमधाम में बाप के साथ बैठ सर्व आत्माओं को रहम की दृष्टि दो। वायब्रेशन फैलाओ। फैला सकते हैं ना? तो बस अभी परमधाम में बाप के साथ बैठ जाओ। वहाँ से यह बेहद के रहम का वायुमण्डल फैलाओ। (बापदादा ने ड्रिल कराई)

**(18.01.1999)**

अभी भी वैराग्य वृत्ति नहीं आई है, इसमें बापदादा भी देख रहे हैं, कब

आरम्भ होता है। अभी तो साधन यूज करने के अनुभवी ज्यादा हैं। बापदादा जानते हैं कि जब तक ब्राह्मणों में बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज नहीं हुई है तो विश्व में भी वैराग्य वृत्ति नहीं आ सकती। सारे विश्व में वैराग्य वृत्ति ही कुछ पापों से मुक्त करेगी। अभी शक्ति सेना को रहम आना चाहिए। अभी रहम कम है, सेवा है। लेकिन रहमदिल, वह अभी ज्यादा इमर्ज चाहिए। पाप कर्म का बिचारे बोझ उतारे जाते हैं। बोझ से झुकते जा रहे हैं। तो रहम आना चाहिए, तरस आना चाहिए।

**(30.03.1999)**

अभी तो दाता बनो, रहमदिल बनो। यह तब होगा, रहम तब आयेगा जब इस वर्ष के आरम्भ से अपने में बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज करो। बेहद की वैराग्य वृत्ति। यह देह की, देहभान की स्मृति, यह भी बेहद के वैराग्य की कमी है। छोटी-छोटी हद की बातें स्थिति को डगमग करती हैं, कारण? बेहद की वैराग्य वृत्ति कम है, लगाव है। वैराग्य नहीं है लगाव है। जब बिल्कुल बेहद के वैरागी बन जायेंगे, वृत्ति में भी वैरागी, दृष्टि में भी बेहद के वैरागी, सम्बन्ध सम्पर्क में, सेवा में सबमें बेहद के वैरागी... तभी मुक्तिधाम का दरवाजा खुलेगा। अभी तो जो आत्मायें आ रही हैं फिर जन्म लेंगी, फिर दुःखी होंगी। अब मुक्तिधाम का गेट खोलने के निमित्त तो आप हो ना? ब्रह्मा बाप के साथी हो ना! तो बेहद की वैराग्य वृत्ति है गेट खोलने की चाबी। अभी चाबी नहीं लगी है, चाबी तैयार ही नहीं की है। ब्रह्मा बाप भी इन्तजार कर रहा है, एडवांस पार्टी भी इन्तजार कर रही है, प्रकृति भी इन्तजार कर रही है, तंग हो गई है बहुत। माया भी अपने दिन गिनती कर रही है। अभी बोलो, हे मास्टर सर्वशक्तिवान, बोलो क्या करना है?

**(31.12.2004)**

अभी बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल फैलाना है। चाहे सेन्टर पर, चाहे विश्व में, विश्व में भी वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल की आवश्यकता है क्योंकि

भ्रष्टाचार पापाचार बढ़ रहा है। बिना वैराग्य वृत्ति के इन आत्माओं का कल्याण नहीं होगा। जो सन्देश देने का कार्य कर रहे हो, अच्छा कर रहे हो। बापदादा को पसन्द है लेकिन उससे सहयोगी बनते हैं, माइक बनते हैं। आप जैसे बाप के वारिस बच्चे समर्पण बच्चे कम बनते हैं। चारों ओर के सेन्टर्स पर वैराग्य वृत्ति की आवश्यकता है। वैराग्य वृत्ति सिर्फ खाने पीने पहनने की नहीं, साधनों की नहीं, लेकिन टोटल मानसिक वृत्ति, दृष्टि और कृति, चारों ओर के ज़ोन में अभी वैराग्य वृत्ति से उपराम, देहभान से उपराम वह अभी लहर चाहिए। बेहद की वैराग्य वृत्ति पहले देह भान की वैराग्य वृत्ति, देह की बातों से वैराग्य वृत्ति, देह की भावना, भाव, इससे वैराग्य वृत्ति चाहिए। तो बापदादा चारों ओर के बच्चों को यह अटेन्शन खिंचवा रहे हैं कि तीव्रगति से चाहे ब्राह्मण, चाहे सहयोगी आत्माओं में श्रेष्ठ उन्नति तब होगी जब वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल स्वयं में और सर्व में फैलायेंगे तब आवाज फैलेगा। सभी वर्ग वाले भी यही सोचते हैं प्रत्यक्षता करने चाहते हैं, प्रोग्राम भी बनाते हैं लेकिन अभी तक हुई नहीं है क्यों? कारण है चारों ओर, चाहे पाप कर्म, चाहे भ्रष्टाचार, चाहे बातों में, पोजीशन में वैराग्य वृत्ति नहीं है। तो प्रत्यक्षता सहज नहीं हो सकती है। तो अभी चारों ओर बेहद की वैराग्य वृत्ति, ब्रह्मा बाप को अन्त तक देखा कितनी बेहद की वैराग्य वृत्ति रही। अपनी देह से भी वैराग्य वृत्ति। बच्चों के सम्बन्ध में भी वैराग्य वृत्ति। तो क्या करेंगे? यही लक्ष्य लक्षण में लाना।

**(18.01.2008)**

एक बात अनुभव कराने के लिए अपने में अटेन्शन देना पड़ेगा। जैसे सेवा आपकी अभी प्रसिद्ध होती जाती है। खुश भी होते रहते हैं और आजकल इन्ट्रेस्ट भी बढ़ता जाता है। अभी बाकी अनुभव कराने की विधि क्या है? वह है उमंग-उत्साह सहित, जितना उमंग उतना ही समय अनुसार अभी बेहद का वैराग्य वृत्ति भी चाहिए। पुरुषार्थ में कोई समस्या रूप बनता है तो उसका कारण है बेहद के वैराग्य वृत्ति में कमी। अब बेहद का वैराग्य चाहिए। बेहद का वैराग्य सदाकाल

चलता है। अगर समय पर होता है तो समय नम्बरवन हो जाता है और आप नम्बर टू में हो जाते हो। समय ने आपको वैराग्य दिलाया। बेहद का वैराग्य सदाकल होता है। एक तरफ उमंग-उत्साह, खुशी और दूसरे तरफ बेदह का वैराग्य। बेदह का वैराग्य सदा न रहने का कारण? बापदादा ने देखा कि कारण है देह-अभिमान। देह शब्द सब तरफ आता है - जैसे देह के सम्बन्ध, देह के पदार्थ, देह के संस्कार, देह शब्द सबमें आता है और विशेष देह-अभिमान किस बात में आता है? दही-अभिमान से देह-अभिमान में ले ही आता है, वह अब तक बापदादा ने चेक किया कि मूल कारण पुराने संस्कार नीचे ले आते हैं। संस्कार मिटाये हैं लेकिन कोई न कोई कारण संस्कार नेचर के रूप में अभी भी काम कर लेता है। जैसे दह-अभिमान की नेचर नेचरल हो गई है ऐसे देही-अभिमानी की नेचर नेचरल नहीं हुई है। कहते हैं हमने खत्म किया है लेकिन एकदम बीज को भस्म नहीं किया है। इसलिए समय आने पर फिर वह देहभान के संस्कार इमर्ज हो जाते हैं। तो अभी आवश्यकता है इस देह भान की नेचर को पावरफुल दही-अभिमानी की शक्ति से वंश सहित नाश करने की क्योंकि बच्चे कहते हैं चाहते नहीं है लेकिन कभी कभी निकल आता है। क्यों निकलता? अंश है तो वंश होके निकल जाता। तो अभी आवश्यकता है शक्ति स्वरूप बनने का, आधार है अपने आपको चेक करो कि किसी भी स्वरूप में अंशमात्र भी पुराना देह भान का संस्कार रहा हुआ तो नहीं है? और वह खत्म होगा बेहद की वैराग्य वृत्ति से। सर्विस देख सुन बापदादा खुश है लेकिन अब बाप की यही चाहतना है कि जैसे सर्विस की फलक, झलक अब लोगों को दिखाई देती है। अनुभव होता है सेवा का, ऐसे बेहद की वैराग्य वृत्ति का प्रभाव हो क्योंकि आजकल सेवा द्वारा आपकी प्रशन्सा बढ़ेगी, आपकी प्रकृति दासी होगी। आपको अनुभव करेंगे, साधन बढ़ेंगे लेकिन बेहद की वैराग्य वृत्ति से साधन और साधना का बैलेन्स रहेगा। जैसे आप लोगों को प्रवृत्ति में रहने वालों को दृष्टांत देते हो कि सब कुछ करते कर्मयोगी कमल पुष्प के समान रहो। ऐसे आप सभी को भी सेवा करते, साधन मिलते, साधना और साधन का बैलेन्स रहेगा। तो

आजकल एडीशन सेवा के साथ बेहद की वैराग्य वृत्ति भी आवश्यक है। चलते फिरते भी अनुभव करे कि यह विशेष आत्मायें हैं। सिर्फ योग में बैठने के टाइम नहीं, भाषण करने के टाइम नहीं लेकिन चलते फिरते भी आपके मस्तक से शान्ति, शक्ति, खुशी की अनुभूति हो क्योंकि समय प्रति समय, अभी समय बदलता जायेगा।

तो बापदादा ने समय प्रति समय इशारा तो दे दिया है लेकिन आज विशेष बापदादा एक तो बेहद के वैराग्य तरफ इशारा दे रहा है, इसके लिए अभी अपने को चक करके देही-अभिमान का जो विघ्न है देह-अभिमान, अनेक प्रकार के देह-अभिमान का अनुभव है, इसका परिवर्तन करो। और दूसरी बात बहुत समय का भी अपना सोचो। बहुत समय का अभ्यास चाहिए। बहुत समय पुरुषार्थ बहुत समय का प्रालब्ध। अगर अभी बहुतकाल का अटेन्शन कम देंगे तो अन्तिम काल में बहुतकाल जमा नहीं कर सकेंगे। टूलेट का बोर्ड लग जायेगा इसलिए बापदादा आज दूसरे वर्ष के लिए होमवर्क दे रहे हैं।

**(07.04.2009)**

अभी चेहरे में चमक दिखाई दे, सदा मुस्कराता हुआ चेहरा, कोई चिंतन में, कोई उलझन में नहीं। अभी दो शब्द याद करो - माया को इशारा करो गेट आउट और अपने को गेस्ट हाउस में अनुभव करो। यह दुनिया आपकी नहीं है, गेस्ट हाउस है, अब तो घर जाना ही है। घर के नज़ारे मन में, बुद्धि में दिखाई दें। बेहद का वैराग्य, गेस्ट हाउस में दिल नहीं लगती। जाना है, जाना है, याद रहता है। तो बेहद का वैराग्य यह कोई भी प्रकार का, मन के संकल्पों का, आपस में, संगठन के, माया के विघ्नों को एकदम समाप्त कर देगा। यह माया के तूफान आपके लिए तोहफा बन जायेंगे। यह जो छोटे-मोटे पेपर आते हैं यह पेपर नहीं लगेगे लेकिन एक अनुभव बढ़ाने की लिफ्ट लगेगे।

**(25.10.2009)**



**अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-**

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र  
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),  
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,  
ज्ञानसरोवर, आबू पर्वत—307501  
राजस्थान, भारत  
मोबाईल: +919414007497, +919414150607  
फैक्स – 02974-238951  
ई-मेल – [bksparc@gmail.com](mailto:bksparc@gmail.com)